ISSN : 2395-4132

THE EXPRESSION

An International Multidisciplinary e-Journal

Bimonthly Refereed & Indexed Open Access e-Journal

The Expression Journal

Impact Factor 6.4

Vol. 9 Issue 2 April 2023

Editor-in-Chief : Dr. Bijender Singh

Email : editor@expressionjournal.com

www.expressionjournal.com

यू. आर. अनंतमूर्ति कृत्त पुस्तक *संस्कार* में दलित विमर्श: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

महामद अली
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग
शासकीय महिला महाविद्यालय, दावणगेरे (कर्नाटक)

::

सारांश

हिंदी साहित्य में दलित लेखकों का अभूतपूर्व योगदान रहा है और इन्होने हिंदी साहित्य को समृद्ध करने में अद्वितीय भूमिका अदा की है। इन लेखकों ने दलित समुदाय के जीवन, उनकी पीड़ा, उनके संघर्ष और उनकी आकांक्षाओं को उजागर किया। लेखक जैसे ओमप्रकाश वाल्मीकि, सूरजपाल चौहान, बिहारी लाल हरित, श्योराज सिंह बेचैन, मोहनदास नैमिशराय, जयप्रकाश कर्दम, तुलसी राम, असंगघोष, मलखान सिंह, मुंशी प्रेमचंद, रवीन्द्रनाथ टैगोर आदि दलित और गैर-दलित लेखकों ने अपनी रचनाओं में दलित जीवन की असलियत को चित्रित किया है । इन लेखकों ने अपनी रचनाओं में जातिवाद, सामाजिक असमानता, पीड़ा, वेदना, अत्याचार और संघर्ष की कठिनाइयों के बारे में लिखा हैं। उन्होंने साहित्य को एक उपकरण के रूप में इस्तेमाल किया जिससे उन्होंने समाज में परिवर्तन लाने की कोशिश की। इन लेखकों ने हिंदी साहित्य में दलित चेतना को मजबूती दी और समाज को उनकी पीड़ा और संघर्ष की समझ में लाया। इनकी रचनाएं आज भी विद्यार्थियों, विचारकों और साहित्य प्रेमियों के बीच लोकप्रिय हैं और उन्हें समाज में परिवर्तन की दिशा में प्रेरित करती हैं। दलितों के शोषण, दमन, अत्याचार और पूर्वाग्रह के पीछे कई कारण थे जैसे कि गरीबी, जाति, वर्ग, क्षेत्र, जाति, आदि, लेकिन उनमें से उनकी जाति उनकी दुखद स्थितियों के लिए बहुत ज्यादा जिम्मेदार थी। सामान्यतः ऐसा देखा गया है कि दलित बच्चे, लोग और महिलाएँ को अपनी जाति के कारण बहुत बार समस्याओं का सामना करना पड़ जाता है। इस शोध-पत्र में यू. आर. अनंतमूर्ति की पुस्तक *संस्कार* का विश्लेषण किया गया है, जिसमें चंद्री के पात्र और उसके ऊपर जाति के लोगों के साथ संबंधों पर विशेष ध्यान दिया गया है।

कुंजी शब्द

दलित साहित्य, सामाजिक व्यवस्था, भेदभाव, असमानता, दलित विमर्ष, सामाजिक विभाजन, जातिवाद, लैंगिक भेदभाव, ब्राह्मणवाद, दलित चेतना, आडम्बर, रूढ़िवादिता, दलित शोषण।

::

यू. आर. अनंतमूर्ति कृत्त पुस्तक *संस्कार* में दलित विमर्श: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

महामद अली
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग
शासकीय महिला महाविद्यालय, दावणगेरे (कर्नाटक)

::

प्राचीन काल में भारतीय समाज चार मुख्य भागों में वर्गीकृत था: ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य और शूद्र। इस वर्गीकरण का मूल कारण लोगों के जीविकोपार्जन के कामों के आधार पर था। वर्ण व्यवस्था का मुख्य उद्देश्य समाज के नियमन और व्यवस्था को सुनिश्चित करना था ताकि हर व्यक्ति अपने काम में निष्ठापूर्णता से लग सके और समाज में सामंजस्य व्यवस्था बनी रहे। पांचवीं श्रेणी के रूप में अछूत भी था, जिनमें लोग विशेष कामों का आचरण करते थे जो उन्हें निम्न जातियों के रूप में पहचान देते थे। इन श्रेणियों में लोग चारण, आचार्य, चौपाल, दबंग, खड़क और आदिक जैसे नामों से जाने जाते थे। हालांकि, इस वर्ण व्यवस्था का लाभ और समाज की व्यवस्था को सुनिश्चित करने की कोशिश हो सकती थी, लेकिन समय के साथ यह सिस्टम समस्याओं का कारण बन गया। लोगों ने इसे जातिवाद का आधार बना दिया और जातियों के आधार पर भेदभाव बढ़ा दिया। यह भेदभाव न केवल सामाजिक, बल्कि आर्थिक और राजनीतिक स्तर पर भी विकास की राहों में रुकावट डालता था।

आधुनिक समय में भी, कुछ लोग दलित समुदाय से संबंधित हैं, जिन्हें आमतौर पर 'अनुसूचित जाति' के लोग या 'दलित' कहा जाता है। ये लोग पारंपरिकत तरीकों से काम करते हैं जिनमें वे बाम्बू बनाने, चमड़े खरीदने, जूते बनाने आदि काम करते हैं। इस प्रकार, भारतीय समाज का वर्गीकरण एक सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोण से देखा जा सकता है। यह वर्गीकरण सिस्टम न केवल प्राचीन समय में, बल्कि आज भी दलित समुदाय के लोगों के जीवन में सामाजिक और आर्थिक समस्याओं का कारण बनता है।

यू. आर. अनंतमूर्ति, एक प्रसिद्ध कन्नड़ लेखक, 21 दिसंबर 1932 को तिर्थहल्ली में पैदा हुए थे और 22 अगस्त 2014 को बेंगलुरु में निधन हो गया। उन्होंने बर्मिंघम विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में डॉक्टरेट प्राप्त किया। इसके अलावा, उन्होंने पद्म भूषण, ज्ञानपीठ पुरस्कार और मैन बुकर इंटरनेशनल प्राइज जैसे कई प्रतिष्ठित पुरस्कार जीते। उन्होंने महात्मा गांधी विश्वविद्यालय के उपाध्यक्ष, साहित्य अकादमी के अध्यक्ष और नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के चेयरमैन जैसे कई प्रतिष्ठित पदों पर कार्य किया। उन्होंने विश्वभर में कई प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में आवासी प्रोफेसर के रूप में भी काम किया। उनके उपन्यास 'संस्कार' के लिए उन्हें विशेष सम्मान प्राप्त हुआ क्योंकि इसमें अंगुष्ठमिती विषय पर चर्चा की गई है। यह उपन्यास मूल रूप में 1965 में कन्नड़ भाषा में प्रकाशित हुआ था और 1970 में इस पर एक फिल्म भी बनाई गई थी। इसका हिंदी अनुवाद चंद्रकांत कुसनूर ने किया है।

उपन्यास में एक छोटे से गांव 'सरस्वतीपुरा' की कहानी बताई गई है, जो कर्नाटक के पश्चिमी घाटों में स्थित है। इस गांव के अधिकांश लोग मध्वा नामक ब्राह्मण समुदाय से हैं। उनके दोहरे मानक, परंपरागतता और अनुशासन को इस उपन्यास ने कटाक्ष किया है। इसके इलावा इस उपन्यास में एक ब्राह्मण के त्याग की कहानी का वर्णन किया

गया है, जिसने काशी में वेद-शास्त्रों का अध्ययन किया और फिर एक ऐसी अपंग औरत से विवाह किया, जिसे उसके पति ने नहलाने, खिलाने आदि का सारा काम किया। उपन्यास की शुरुआत इस प्रकार होती है:

> भागीरथी की सूखी-सिकुड़ी देह को नहलाकर उसने उसे कपड़े पहना दिए। फिर, जैसे हमेशा की दिनचर्या में, पूजा-नैवेद्य आदि करके देवता के प्रसाद के रूप में फूल उसके बालों में सजाए गए, चरणामृत पिलाया। भागीरथी ने उसके चरणों को स्पर्श किया और उससे आशीर्वाद प्राप्त किया। फिर प्राणेशाचार्य ने रसोई से एक कटोरी दलिया लाकर पेश किया। (11)

प्राणेशाचार्य की पत्नी अपने पति पर दूसरी शादी के लिए दबाव भी डालती है क्योंकि वह उसको एक भी संतान देने में सक्षम नहीं है। वह कहती रहती है, "मुझसे बंधकर आपको क्या सुख मिला है? घर में संतान तो होनी चाहिए न? आप एक शादी और कर लीजिये।" (11) परन्तु प्राणेशाचार्य हर बार बात को हंसकर टाल देता है। उनकी दूसरी शादी होना तो एक सामान्य सी बात थी क्योंकि उनकी उम्र अभी चालीस साल भी नहीं हुई थी और कोई भी इतने पढ़े लिखे व्यक्ति से अपनी पुत्री कि शादी के लिए राजी हो जाता। प्राणेशाचार्य भी स्वयं को "पंचामृत की तरह पवित्र" (12) मानता है और गाँव में सामान्य जीवन-यापन करता है। प्राणेशाचार्य गांव के एक शिक्षित ब्राह्मण थे और उनके निर्देशों का पालन बाकी सभी लोग करते थे क्योंकि प्राणेशाचार्य ने काशी विद्यापीठ से वेद, उपनिषद और हिन्दू धर्मग्रंथों का अध्ययन किया था। गरुड़ाचार्य इस बारे में कहता है, "हम लोगों में महापंडित कहलाने योग्य आप ही हैं, आपकी बातें हमारे लिए वेदवाक्य हैं। आपकी जो आज्ञा होगी वही ठीक होगी" (15)।

अनंतमूर्ति ने इस उपन्यास में एक अछूत महिला, चंद्री की कथा सुनाई है। चंद्री ने एक ब्राह्मण नामक नारणप्पा से प्यार किया था जिनका बुखार से निधन हो गया था, और जब उपन्यास खुलता है, तो वह गांव के प्रमुख ब्राह्मण को नारणप्पा की मृत्यु की जानकारी देने के लिए उनके पास आती है। उसने बताया कि वह शिवमोग्गा से लौटकर आया और बुखार में बिस्तर पर लेट गया। चार दिन बुखार आया और उसकी मृत्यु हो गयी।

> "कौन? नारणप्पा? क्या हुआ?"
> "वह चल बसे।"
> "नारायण! नारायण! कब?"
> "अभी-अभी!"
> "नारायण! क्या हुआ था उसे?"
> "शिवमोग्गा से आये थे तो ज्वर था। खाट पर सो गए। बस चार दिन ज्वर रहा। पसली के पास गांठ निकल आई थी। फोड़ा जिस तरह फूट जाता है न, वैसे।" (12-13)

प्राणेशाचार्य ने अपने जीवन में एक अवालिद लड़की, भागिरथी, से विवाह करके एक बड़ा त्याग किया। प्राणेशाचार्य ने घरेलू कामों का सारा काम किया और अपनी पत्नी की भी देखभाल की, "उसने भागिरथी के शरीर को नहलाया, सूखा हुआ मटर की पौदी को और एक ताज़ा साड़ी बांधी; फिर उसने भगवानों को भोजन और फूलों की अर्चना की, जैसे कि वह हर दिन करता था, फिर उसने उसके बालों में फूल डाले और उसे पवित्र जल दिया..." (अनंतमूर्ति 1)। उनके पास कोई बच्चे नहीं थे और भागिरथी ने प्राणेशाचार्य से दूसरी शादी करने की विनती की, "मेरे साथ शादी करना कोई आनंदकारी बात नहीं है। एक घर को एक बच्चे की आवश्यकता होती है। तुम क्यों फिर से शादी नहीं कर लेते? प्राणेशाचार्य हँस पड़ते। बुजरा बूढ़े आदमी के लिए शादी?" (अनंतमूर्ति 1), लेकिन प्राणेशाचार्य उसकी ओर कोई ध्यान नहीं देते।"

नारणप्पा को इस उपन्यास में एक अलग तरह के ब्राह्मण के रूप में दिखाया गया है जो मौज-मस्ती में विश्वास रखते हैं। उन्होंने ब्राह्मणत्व को खारिज किया, आधुनिकता की प्राथमिकता दी और एक नजदीकी गांव, कुंडापुरा, से चंद्री को अपने घर लाया। नारणप्पा जब जीवित थे, तो वह चंद्री को प्रसन्न करने का प्रयास किया। उन्होंने अपने आगे के बगीचे में नाइट-क्वीन पौधा उगाया। इस पौधे के फूल सिर्फ और सिर्फ चंद्री के बालों की सजावट के लिए थे, जो उसकी पीठ पर एक मोटी काली सांप की तरह फैली हुई थी। अब चंद्री की वफादारी का इस घटना के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है कि वह उसके अंतिम संस्कार की चिंता करती है। वह एक बड़ी समस्या का सामना

करती है क्योंकि गांव के ब्राह्मणों ने नारणप्पा को बहिष्कृत कर दिया था क्योंकि उसने मांस खाना शुरू किया, शराब पीने लगा और एक अछूत औरत के साथ रहने लगा था।

उन्होंने उससे सभी प्रकार के संबंध काट लिए थे। उसकी मृत्यु के बाद, लोग उसकी लाश को उनके लिए एक बोझ के रूप में लेने लगे। गरुड़आचार्य और दूसरे ब्राह्मण उसको अपना दुश्मन समझते हैं। किसी गाँववाले को उसकी लाश को छूने की तैयारी नहीं थी। लोग तो अब उसकी जाति पर भी सवाल उठाने लगे थे और यह कहने लगे थे कि वह वास्तव में ब्राह्मण भी है या नहीं। गाँववाले न तो खुद उसके शव के अंतिम संस्कार करने को तैयार थे और न ही उन्हें यह चाहिए था कि कोई नीच जाति का व्यक्ति उसकी लाश को छू सके। लक्ष्मणाचार्य भी कोई कसर नहीं छोड़ता। वह कहता है कि नारणप्पा एक दूसरी औरत के प्रेम-पाश में बंध चुका था। उसने उसकी बीमार पत्नी को भी मरने के लिए छोड़ दिया था। उसने कहा, "जिसके गले में मंगल-सूत्र बांधा, उसे त्याग़ दिया। खैर जाने दो, ... किसी दूसरी स्त्री से जा फंसा। मेरी साली पागल होकर मर गयी और इसने उसका दाह-संस्कार भी नहीं किया। ... वह गन्दी गालियां बकता था। (17)। अंततः जब लोग नारणप्पा के अंतिम संस्कार पर पैसे खर्च करने में झिझक रहे थे, तो चंद्री आगे आती है और उसके प्रेमी के अंतिम संस्कार में कोई वित्तीय बाधा नहीं आने देने के लिए अपने आभूषण देती है।

इस उपन्यास में चंद्री को एक बहुत चतुर महिला के रूप में चित्रित किया गया है जो अपने काम को करवाने के लिए सभी तरकीबें उपयोग करती है। जब प्राणेशाचार्य हनुमान मंदिर से वापस लौट रहे थे, तो चंद्री उनसे मिलने जाती है और उनके पाँवों में गिर जाती है और नारणप्पा की लाश के अंतिम संस्कार करने की प्रार्थना करती है। उनके हाथ चंद्री के सीने को छूते हैं जब वह उसे दूर करने की कोशिश कर रहे थे। चंद्री के पास आकर्षक शरीर था और नारणप्पा उसके साथ शारीरिक संबंध बनाने के लिए तैयार हो जाते हैं।

चंद्री अपने घर में अधिकांश समय व्यतीत करती है और वह अपने घर से केवल व्यक्तिगत कारणों के लिए बाहर निकलती है। यहां तक कि वह ब्राह्मणों के लिए अछूत भी है, फिर भी कई ब्राह्मण उसकी सुंदरता के कारण उसे आकर्षण की दृष्टि से देखते हैं। एक और बात जो इस उपन्यास में ध्यान में लाने योग्य है कि चंद्री के यौन संबंध प्राणेशाचार्य के साथ एक अंधेरे और अकेले जंगल में होते हैं और यह एक अजीब बात है कि न तो प्राणेशाचार्य और न ही चंद्री मिलकर बोलते हैं। उस स्थिति के दौरान, प्राणेशाचार्य केवल 'अम्मा' कहते हैं और चंद्री रोती है। यह भी अजीब बात है कि एक उच्च विद्वान प्राणेशाचार्य भी भूल जाते हैं कि वह कौन हैं, कहाँ हैं और वह क्या कर रहे हैं। जब वह अपने असली अवस्था में मिडनाइट पर वापस आते हैं, तो वह चंद्री के गोद में होते हैं और वह अपने को एक अजनबी की तरह महसूस करते हैं। उनमें पश्चाताप की भावना होती है और उन्हें लगता है कि उसके बीच में जो कुछ भी हुआ, वह इच्छापूर्ण नहीं था। वह चंद्री से कहते हैं कि वह गाँव के लोगों के सामने सब कुछ खुद ही बता दें क्योंकि उन्हें उस तरह के शब्द नहीं कहने की हिम्मत नहीं है जो उन पर विश्वास करते हैं। इसके अलावा, उन्होंने कहा कि उन्हें अपने गाँव के लोगों की ओर से निर्णय लेने का अधिकार खो दिया है।

चंद्री एक सक्रिय और आत्मनिर्भर महिला है जो अपने जीवन के केवल यथार्थित निर्णय लेने की मजबूती रखती है। वह किसी से नहीं डरती है और प्राणेशाचार्य के साथ यौन संबंध बनाते समय उसको केला खिलाती है, अपनी साड़ी उतारती है, उसे जमीन पर बिछा देती है, और पहले उसपर लेट जाती है और प्राणेशाचार्य के साथ यौवन सुख भोगती है। हालांकि वह एक नीच जाति की महिला है, लेकिन उसमें निर्णय लेने की एक उच्च संवेदना है। वह प्राणेशाचार्य की आदेश को भी अस्वीकार करती है कि वह गाँव के ब्राह्मणों को सब कुछ प्रकट करें। चंद्री रात्रि को एक मील चलकर नारणप्पा के मुस्लिम मित्र अहमद बारी से मिलने जाती है, जो मुस्लिम मछली व्यापारी हैं, और उससे नारणप्पा के अंतिम संस्कार करने की प्रार्थना करती है। वह अपने प्रेमी नारणप्पा के अंतिम संस्कार का कार्य बहुत चुपचाप और चतुरता से करती है और प्राणेशाचार्य की छवि को किसी भी तरह से नुकसान नहीं पहुँचने देती। इसके बाद वह गाँव छोड़ देती है।

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि चंद्री को एक मजबूत पात्र के रूप में चित्रित किया गया है क्योंकि वह अंतिम संस्कार के लिए प्राणेशाचार्य पर निर्भर नहीं है। प्राणेशाचार्य केवल किताबी ज्ञान रखते हैं और वह इसे व्यावहारिक जीवन में नहीं लाते हैं। वह कमजोर पात्र लगते हैं क्योंकि वह नीच जाति की महिला, चंद्री, के साथ

शारीरिक संबंध बनाने में नहीं रुक पाए और उसकी पत्नी की दहेज में मृत्यु होने के बाद जल समाधि करने के बाद भाग जाते हैं। उसको डर था कि वह लोगों के सामने कैसे खड़ा होगा। जब गाँव में बीमारी फैलती है, तो वह गाँव वालों को उनकी किस्मत पर छोड़कर भाग जाते हैं। उसका ज्ञान व्यावहारिकता के बिना अवशिष्ट रह जाता है। उसे धार्मिक दायित्वों से मुक्त होना चाहिए और मानव जीवन में कड़े धार्मिक नियमों की बजाय प्रैक्टिकल तरीकों की महत्वपूर्णता को समझना चाहिए। उपन्यास 'संस्कार' में विभिन्न प्रकार की संघर्षों का वर्णन किया गया है और यह प्राणेशाचार्य के संन्यासी जीवन और नारणप्पा के मनमौजी दृष्टिकोण को चित्रित करता है।

चंद्री भी इसी दृष्टिकोण में विश्वास रखती है लेकिन उसे जिम्मेदार महिला के रूप में प्रस्तुत किया गया है। वह अपने प्रेमी नारणप्पा के ठीक अंतिम संस्कार का प्रबंधन करती है, जिसे दूसरे ब्राह्मणों द्वारा एक दोषी माना जाता है। इस उपन्यास में ब्राह्मणवाद के दोगलेपन पर भी प्रकाश डाला गया है क्योंकि यह देखने को मिलता है कि सभी लोग औरों के सामने चंद्री की बुराई करते हैं लेकिन चंद्री के "उन्नत उरोज" को देखकर ब्राह्मणों का मन डोल जाता है। दुर्गाभट्ट भी चंद्री की सुन्दरता को देखकर सोचता है, "सम्भोग में तो यह पुरुष को चूस ही जाती होगी।" (18)। कुछ आइ लोचक यह भी मानते हैं कि यह एक स्वतंत्रवृत्तात्मक उपन्यास है और इसमें उसकी बचपन की यादें दर्ज की गई हैं। परन्तु कुछ भी हो, यह उपन्यास वास्तव में दलित जीवन का यथार्थ चित्रण करता है और यह दर्शाने का प्रयत्न करता है कि वास्तव में एक दलित व्यक्ति को आज भी समाज में बहुत सारी समस्याओं को झेलना पड़ता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. यू. आर. अनंतमूर्ति, *संस्कार*, नयी दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2008.
2. डॉ. एन. सिंह, *मेरा दलित चिंतन*, कंचन प्रकाशन, 1999.
3. डॉ. समिउल्ला साब, यू. आर. अनंतमूर्ति के उपन्यास 'संस्कार' में ब्राह्मणवाद, रूढ़ीवाद और जातिवाद: एक समीक्षात्मक अध्ययन, *अभिव्यकि पत्रिका*, 8.1, 2022, 1-5.
4. दीपा लाभ, यू. आर. अनंतमूर्ति: प्रबुद्ध व्यक्तित्व के प्रखर साहित्यकार, हिंदी से प्यार है ब्लॉग, 21 दिसंबर 2021.
5. माताप्रसाद. *हिंदी साहित्य में दलित काव्यधारा*, विश्विद्यालय प्रकाशन, 2002.
6. शैलेन्द्र चौहान, *यू. आर. अनंतमूर्ति: अनंत विद्रोह की चेतना*, सब लोग, दिसंबर, 2020.
7. डॉ. नरिसंहदास वणकर, *दलित विमर्श*, चिंतन प्रकाशन, 2005.